

१८

१८

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुक्ते.

— हस्त लिखित संग्रहः —

ग्रंथ क्रमांक ५२६ (१८९८)

ग्रंथ नाम राजवाडा स्वयंबर.

विषय मराठी काव्य.

Join Date of Rajawade Sanskritan Manica Dilice and the Yasvantrao Chavhan Library
"Joint Date of Rajawade Sanskritan Manica Dilice and the Yasvantrao Chavhan Library
Number"

(1)

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वयैनमः ॥ श्रीगुरुभ्यो ॥
॥ नमः श्रीशानेस्वरायनमः ॥ अँ नमोजीश्रीकृष्णना ॥
॥ थागणेशसरस्वतीमेधरीतालुंचीलुंकुळदेवता ॥
॥ कवणआतांप्राथुम्हि ॥ तीआखीलआवधेजन ॥
॥ सहजयुर्लुजेनादृत ॥ उकथेसीलावीसीमन ॥
॥ नीजामुण्गावयाग्न ॥ ऐकतांश्रीलक्ष्मकथाश्रवण ॥
॥ तेणांचीत्तद्विभिर्वेदीनीजापा ॥ कमकिमिंआखंड ॥

॥५॥ लागले धान भीम की सीगु। शुक्र योगिं द्वा प्र
॥ ती। प्रभु के लोपरी कृति। भीम की हरण श्रीपती।।
॥ कायनी मीय पैं केले धा कांक रीतो सीहूण सीघ आ।।
॥ तरी मीयो बक जाणा। वर नकथां संत अवण।। ते
॥ जीवन मजुसे।। ५।। (वीरो वहें आहूल चे रीत्रा।।
॥ दुःखनी शुद्ध सुखनी पवीत्र।। अवण करीतां माजे।।

"Joint Project of Dr. Rajawade, Dr. Shodhal Mandal, Phule and Dr. Yashwantrao Chavhan Sahitya Akademi, Mumbai"

(2A)

॥ श्रोत्र॥ आधीका अधीक जु के ले॥ द्वी इतन॥
॥ कथान के पुड़ी॥ नीय नुलन ई ची गोड़ी॥ सेउं॥
॥ जाणति आवडी॥ ते पराय स्थडी पावन्ते॥ उहे॥
॥ रवान प्रश्नां चाआर लक्ष्ये सी जाला सा॥
॥ दर॥ कै सेंव चेन बोल॥ गंभीर॥ छपा आपार॥
॥ रायाचि॥ एक बापा परीक्षीती॥ तुंतवसु रवाचि॥
॥ सुख मोतीगि भीम की पाणी ग्रहण स्त्रीती॥ यथा

॥ नीहुतीसोंगेन॥१॥ आगावसुद्वेषाचीयेतपत्रा॥
॥ प्री॥ श्रीलक्ष्मेव कीउहरयेती॥ लक्ष्मा-चीयलक्ष्मा॥
॥ शार्की॥ जालीउत्तरतीभसंडकी॥२॥ कनकासवें॥
॥ जैसिकांती॥ सुवसि वेद सीहीती॥ तैसीआव॥
॥ तरलीलक्ष्मेवार्की॥ वेदम्भदैसीरमीरी॥३॥
॥ जैसामुत्तीसिंतवीवेकु॥ तैसाजापराजाभीमकु॥

© Sajawade Shishodhan Mandir, Dehu and the Yashoda
Chavhan Project, Aligarh, UP, India
Digitized by srujanika@gmail.com
Digitized by srujanika@gmail.com

॥ सहाथीना अती सारी कु। नी छकलं कु वो भत।।
॥ १८। अद्वा पुलीं शुद्ध मती। जाली ग भति धरी ती।।
॥ लेथे जें न्मनी शक रा को। चै हात्की रु न्मी णी। १९।।
॥ नव बीधा ते बी नव म। स। असि भर ले पुण ही बा।।
॥ स।। सांग जं न्मली रा। नव बीधा न रु न्मी णी।।
॥ १४।। पां चा बीश यां चे से वटी। सु दु धी उप जे जे बी।।
॥ जो मटी।। तैसी पां चा हीधा कु टी। जाली जो रटी।।

Joint Project of
Sant Niranjan Mandal, Dhule and the
Lelewanifor
Digitized by srujanika@gmail.com

॥ रुक्मीणी ॥ १५ ॥ त्यरपत्रपें आतीसुंहरा ॥ लावंण्ये ॥
॥ गुणेंगुणगंभीरा ॥ हीवन्तं दीघ सीजाळीथोरा ॥ व ॥
॥ रुधीचारं रायासी ॥ १६ ॥ ते कीतीनामं त्रांगुण ॥
॥ रायापासीआलाज ॥ तेगंके ले अद्विष्ट ॥
॥ कीतनि ॥ ते थें तनु मनवेधन्डे ॥ १७ ॥ जैहुनी ॥
॥ जंमाळिकुसीं ॥ तैहुं कीआवडेरायास्ति ॥ आमा ॥

Rajawade Seashodhan Mandal, Dhule and the "reshwanifali"
Digitized by srujanika@gmail.com

॥ न्यकरुनीपांचासी ॥ ते कीयो कीपढी थंती ॥ १८ ॥
॥ बैसली होती सायांपा सी ॥ साहरदेस्वो नीभीम ॥
॥ कीसी ॥ मगवणीले छष्टन्पासी ॥ चीख रुपे सी ॥
॥ साकार ॥ १९ ॥ जो नीरुण नी तिकार ॥ नीः छकम ॥
॥ आणी नीरोपचार ॥ ते लालाजीसाकार ॥ २० ॥
॥ लावीग्रही श्रीछष्ट ॥ २० ॥ अतीसुरंगचरणतके ॥
॥ उपमेकठीणरातोसुके ॥ बाघसुयचीनीउजाके ॥

(RA)

॥ तैसीकवेळे ठांचा-ची ॥ २१ ॥ ध्वजत्रज्य अंकशरेवा ॥
॥ चेरणीची समुद्रीके देवा ॥ नवणविती सह श्रमुखां ॥
॥ ब्रह्मांदी काआलक्षा ॥ २२ ॥ री तु नी इङ्गि नी छकी ची ॥
॥ वोती लीष्ण तनुं सांव की पाठ्लं सकुमार कोवची ॥
॥ घारीं नी छी दोही भाजी ॥ २३ ॥ सुनी छ नभा-ची याक ॥
॥ कीका ॥ तैस्या अंगो छीया देवा ॥ वरी न रवें या ॥

Digitized by
Rajawade &
Balshodhan Mandir Trust and the Yashwantrao Chavhan Profes-
sional Library, Mumbai
Digitized by srujanika@gmail.com

॥ चंद्रेरेखा ॥ चरणीकीयुश्यालुव्यन्धा ॥ २८ ॥ सां ॥
॥ तुनीकठीणत्वाचेऽमीभा ॥ सचेतनमगरजल्भा ॥
॥ त्वेस्त्वेरणजीस्वयंभा ॥ लक्ष्मीरीरीशोभती ॥ २५ ॥
॥ क्षष्टांगाजउलेपण ॥ रिजुसीस्फुटजालेघेगुण ॥
॥ वीसरकीआलमानंजाए ॥ पीतांबरपणकासेसी ॥
॥ २६ ॥ लक्ष्मीरणाचेनीभुघणें ॥ वाकीनेवेदासीआ ॥
॥ नीलेउणें ॥ लेतवंधनंनीडेकीलेमौन्य ॥ क्षष्ट ॥

The Ratnadeo Sanskrit Mandal, Dhule and the Ratnadeo Sanskrit Mandal, Mumbai,
Joint Project of the Ratnadeo Sanskrit Mandal, Mumbai

॥ कीरन हैं गजे ॥ २७ ॥ सोहं भावाचेनीं गजरे ॥
॥ चेरणीं गजती ने पुरों मुमुक्षा चेमन नीहसुरे ॥
॥ याचे इरिक रीढ़से ॥ २८ ॥ तोड़र गजे कवणे मा ॥
॥ नीं ॥ जन्म मरण हरी चर मि ॥ नाहीं उपासका ला ॥
॥ गुनीं ॥ संकंल्प वीकङ्ग लीयां ॥ २९ ॥ अनंतरा ॥
॥ पनाक ले वेदीं ॥ ते अकछी जे जेंकी सदुधी ॥ तै ॥

॥ यामीमरेकव्वा माजमधी ॥ चीकुंत संधीजडली असे ॥ ३० ॥
॥ खपदपावळीयापाठी ॥ जेवीकांब्रतीझोयउफ्फाटी ॥
॥ तेस्याकिंकिनीक्षुद्रष्टव्यिका ॥ आथोमुखमेख्का ॥
॥ आतीशयेक्षिमाशुरगण ॥ हिताआभीमानपंच्या ॥
॥ नेना ॥ दुर्बुनिकृहम् ॥ खना ॥ इजाराणातो ॥
॥ गोऽगं ३ ॥ पाहाकयाकुष्ममध्यरचना ॥ चिभीचिङ्गे ॥
॥ पुजालीज्ञापा ॥ साडोनिअंगीच्याआभीमाना ॥ मे ॥
॥ खक्केखेवणास्वयजउङ्गे ॥ नाभीसीनाभीतादेउनि ॥



Rajaram Chavhan
Rajaram Chavhan
Rajaram Chavhan

॥राखीलविधता॥ तेथिचापारपाहगा॥ पेविधता॥
॥नेणेचि॥ अस्तुणोनिष्टमनासीनामा॥ उदरीभेने॥
३) ॥ अस्यलादवा॥ जोवित्तगारमाजीठवा॥ तंरात्ता॥
॥ केकेलाश्वाझ॥ सहारी चूर्णननावी॥ तेसीतुदं॥
॥ रीभिगुणभिकेळी॥ इभीतीमावृणी॥ बहीमु॥
॥ खावाठकीया॥ अप्तानकळहुदईयमहिमानी॥
॥ उपनिशधापडीकेमोन्या॥ तेथेविसरङ्गेसङ्गन॥

"Joint Project of the Rayavade Sanskrit Mandal, Dhule & the Sahitya Akademi, Dhule, Maharashtra
Digitized by srujanika@gmail.com

॥ देहाभीमानसांडुनीयां ॥३४॥ छुंन्यसारंनिनी ॥
भरावकास ॥ तेंचीलछहृदृसावकांडा ॥ संतीकेला ॥
॥ रहीवांस ॥ ब्रतीशुंन्यहोउनागुढा तीयेपहीजेसग ॥
॥ क्षीन ॥ तेंचीपदकजटीवाणा ॥ शुक्लमोंतीलंग ॥
॥ संपूर्ण ॥ गुणेवीणलङ्क गर्वा ॥३५॥ ज्ञानवैराग्य ॥
॥ सुक्लीसंपुटी ॥ नीपजलीमुक्लमोंतीयगोमटी ॥ तेची ॥
॥ येकावलीकंटी ॥ श्रीछछाचेन्नोभत ॥४०॥ जनवी ॥

Digitized by srujanika@gmail.com
Digitized by srujanika@gmail.com
Digitized by srujanika@gmail.com
Digitized by srujanika@gmail.com

॥ जनसमानकक्षा ॥ तो-कीआपादवनमाला ॥ रो ॥
गतीनीजदांतीनीर्मला ॥ रकेगकीवैजयंती ॥ ४७ ॥
॥ वोंकारमात्कासवटा ॥ तो-कीज्ञाणवाकंबुक्कं
॥ ठ ॥ वेदाचेष्टेमुक्तीः ॥ तथुनीत्रैगटत्रीकोडी ॥
॥ ४८ ॥ नवाणोनीउंपनावधाचीन्वाणी ॥ आर्थका ॥
॥ ठीलाद्वाधोनी ॥ तो-कीकंठीकोस्तुभमणी ॥

Digitized by
Rajashah Mandai Bhule and the Yashwantrao Chavhan Museum
Joint Project of the
Rajashah Mandai Bhule and the Yashwantrao Chavhan Museum

॥ निजकर्णी इककर्ण ॥ अपागगणग्ना च शुद्धाद्यु ॥ तर्क ॥
॥ सरव्वत्राहु दुःख ॥ पराक्रमे आती प्रचंडा भी मध्यदाउनी ॥
॥ दीर्घा ४३५ पंचभूतमीन भीन तैस्य उत्तिर्गोर्क्षयाजान ॥
॥ तकहु तरी बैज्ञानिक्षुष्ण ॥ पवामेल ती पुक्षुष्टी ॥ ४ ॥
॥ चहु स्वामी पिक्री याशक ग्रामी व्याहु भुजा शोभती ॥
॥ उत्तिर्गोर्क्षय वर्स निले हुरी ॥ कक्ष बक्ष ए नहिति पुहुपा ॥ ४५ ॥
॥ उत्तिर्गोर्क्षय कार ॥ हुते तद्वक्षणी सते जधारा ते ची ॥
॥ धर्मधर्मी वयक्ता भारिमुद्दिनी उद्गठा ॥ ४५५ ॥ वायज्ञा ॥

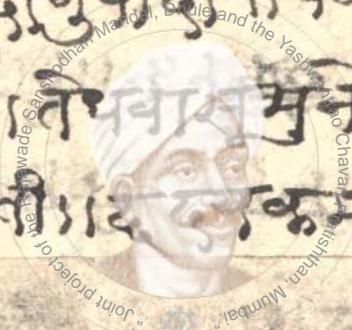
(9)

॥सिमानकरिचेंदु॥ वैकीझक्कतपेगदु॥ निशकी॥

॥ठिवितशङ्का॥ वैद्यनुवायुपाचंजन्यु॥ ४५॥ अमे ॥

॥दुभकमजभेटती॥ तोप्पारमुनिकेचीमिकली ॥

॥तळापुच्जेकगीहाती॥ दरक्कमक्कीबाहुतरसो॥ ४६॥



॥तीं हृष्यकमवाहातुमे॥४८॥ बालोवटांकीलीपुर्वों
॥ च्या हीविदजाकेसुरेवो॥ केरीकंकणेंजडीतमाणीकेंग।
॥ वातीकिंतेवेदांत॥ ५०॥ यंत्रउपवर्णीउपासकां॥
॥ हेसीयाओंगोकीप्रसदी छानीकोणवाटको॥
॥ एकणीकिा॥ जडीतमाणीउपांगमोक्ता॥५१॥ उ॥
॥ वित्तरमीसांसदोक्ती॥ कुडलेजानीहृष्टश्वरणी॥
॥ उपनीघटार्थकीरणी॥ सचकतातीसतेजा॥५२॥

॥ यक्षणतीसाकारा ॥ यक्षणतीमकाराकादा ॥ प ॥
॥ नीतेसाकारनां नीवीकिरा ॥ अवरें नीवीकिरभावा ॥
॥ क्लती ॥ ५३ ॥ भाकुनीयामोहसुखा ॥ तेथीचासुखा ॥
॥ वक्ळाहीरवा ॥ लेलद्धा च मुखा ॥ नीसुनीद्धिशि ॥
भमीरवता ॥ ५४ ॥ उपम-चंद्रकलागृहना ॥ तोतंवा ॥
॥ लक्ष्मीक्षिण ॥ उदोअस्तवीणसंपुणी ॥ वदनें ॥

Joint Profile
Rajawade, G.S. Godha, Mandal, Photo and the
Yashwantrao Chavhan Pradhani, Number
"Sodchvan Pradhani", Number 1.

॥ दुष्टक्षर्णं च ॥ ५८ ॥ जीवसीवयोकाकार ॥ तेस्मै मी ॥
॥ न लेहो की अधर ॥ माजी हंतपं की तेजाकार ॥
॥ कीदा नंदे शब्द करी ॥ ५९ ॥ नात्तीकां लेहेनी ॥
॥ नात्तीक ॥ उंचावले तेनास १९ ॥ पुरुष ही उंतां पा ॥
॥ वल्लदुःख ॥ छष्टस्या सुखविंजान्ता ॥ ५१ ॥ वी ॥
॥ राठडोले चेतन्यपण ॥ गासां दों आले पाहालां ॥
॥ पण ॥ आपअपणीयाते हेरेवण ॥ सबाहू अभ्यं ॥
॥ तरसमद्दी ॥ ५८ ॥ ज्ञानवीज्ञानाचीं पाती ॥

॥ मीथ्या परें लवत होती ॥ ते ही सारनी मायुती ॥
॥ सहज स्थिती पाहा तुम ॥ ५९ ॥ आधीषणवी ॥
॥ दाळ भाटी ॥ तैसी आळ कपाटी ॥ संची ॥
॥ दानं हयेके मेठी ॥ ते तुकी लुळौठी ॥ ६० ॥
॥ उगाळुनी या अहं पण ॥ साहु काढी लेशु दुर्चंदन ॥
॥ तें चेके लेश्छापणि गी नीजभाटी मलवटू ॥
॥ सपुरगगनां कुरसरळ ॥ तैसे मस्ल की केंश ॥

Digitized by
Chandrasekhara Iyer
on behalf of the
Balawade Seemandhan Mandai, Dhule and the Yashwantrao Chhatrapati
Sinhagad Museum, Pune



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com